लीलाधर जगूड़ी

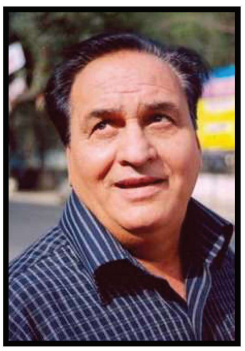

लीलाधर जगूड़ी का जन्म धंगण गाँव, टिहरी, उत्तराखंड में 1 जुलाई 1944 ई० को हुआ था । ग्यारह वर्ष की अवस्था में घर से भागकर अनेक शहरों और प्रांतों में कई प्रकार की जीविकाएँ करते रहे । फलस्वरूप स्कूल और कॉलेज की शिक्षा में क्रमिकता का अभाव रहा । अंततः उन्होंने हिंदी भाषा और साहित्य से एम० ए० किया । सन् 1966 से 1980 तक उन्होंने उत्तरप्रदेश के शासकीय विद्यालयों में शिक्षण कार्य किया । वे शिक्षक आंदोलन में सक्रिय रहे, शिक्षक संघ के अध्यक्ष भी रहे । सन् 1981 में उत्तरप्रदेश सूचना एवं जनसंपर्क विभाग से संबद्ध हुए और वहाँ की मासिक पत्रिका 'उत्तर प्रदेश' के प्रधान संपादक बने । संप्रति, वे सेवामुक्त हैं और लेखन कार्य में सक्रिय हैं ।

लीलाधर जगूड़ी की प्रमुख काव्यकृतियाँ हैं - 'शंखमुखी शिखरों पर', 'नाटक जारी है', 'इस यात्रा में', 'रात अब भी मौजूद है', 'बची हुई पृथ्वी', 'घबराए हुए शब्द', 'भय भी शक्ति देता है', 'अनुभव के आकाश में चाँद' और 'ईश्वर की अध्यक्षता में' । उन्होंने एक नाटक भी लिखा है - 'पाँच बेटे' । जगूड़ी को 'अनुभव के आकाश में चाँद' नामक कविता संकलन पर 1997 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

लीलाधर जगूड़ी की कविता जीवन और अनुभव के अप्रत्याशित विस्तारों में जाने की एक उत्कट कोशिश है । पिछले चार दशकों से अपने काव्य-वैविध्य और भाषिक प्रयोगशीलता के कारण उनकी कविता हमेशा अपने समय में उपस्थित रही है और उसमें समकालीनता का इतिहास दर्ज होता दिखता है । समय और समकाल, भौतिक और आधिभौतिक, प्रकृति और बाजार, मिथक और टेक्नोलॉजी, दृश्य और अदृश्य, पृथ्वी और उसमें मौजूद कीड़े तक का अस्तित्व उनकी कविता में परस्पर आते-जाते, हस्तक्षेप करते, खलबली मचाते, उलट-पुलट करते एक विस्मयकारी लोक की रचना करते हैं ।

प्रस्तुत कविता 'मेरा ईश्वर' लीलाधर जगूड़ी के कविता संग्रह 'ईश्वर की अध्यक्षता में' से ली गई है । यह कविता उस प्रभु वर्ग पर गहरी चोट करती है जो मनुष्य को येन-केन-प्रकारेण अपने शिकंजे में ले लेता है और उसे अपने हाथ की कठपुतली बनाए रखता है ।

मेरा ईश्वर

मेरा ईश्वर मुझसे नाराज है
क्योंकि मैंने दुखी न रहने की ठान ली

मेरे देवता नाराज हैं
क्योंकि जो जरूरी नहीं है
मैंने त्यागने की कसम खा ली है

न दुखी रहने का कारोबार करना है
न सुखी रहने का व्यसन
मेरी परेशानियाँ और मेरे दुख ही
ईश्वर का आधार क्यों हों ?

पर सुख भी तो कोई नहीं है मेरे पास
सिवा इसके कि दुखी न रहने की ठान ली है ।

अभ्यास

कविता के साथ

1. मेरा ईश्वर मुझसे नाराज है । कवि ऐसा क्यों कहता है ?
2. कवि ने क्यों दुखी न रहने की ठान ली है ?
3. कवि ईश्वर के अस्तित्व पर क्यों प्रश्नचिह्न खड़ा करता है ?
4. कवि दुख को ही ईश्वर की नाराजगी का कारण क्यों बताता है ?

5. आशय स्पष्ट करें –
   (क) मेरे देवता मुझसे नाराज हैं
   क्योंकि जो जरूरी नहीं है
   मैंने त्यागने की कसम खा ली है ।
   (ख) पर सुख भी तो कोई नहीं है मेरे पास
   सिवा इसके की दुखी न रहने की ठान ली है ।
   (ग) मेरी परेशानियाँ और मेरे दुख ही ईश्वर का आधार क्यों हों ?
6. कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट करें ।
7. कविता में सुख, दुख और ईश्वर के बीच क्या संबंध बताया गया है ?

कविता के आस-पास

1. लीलाधर जगूड़ी के समकालीन कवि विजेंद्र, चंद्रकान्त देवताले, ऋतुराज, अशोक वाजपेयी, विनोद कुमार शुक्ल, नरेश सक्सेना आदि की कविताएँ उपलब्ध कर पढ़ें ।
2. जगूड़ी उत्तराखंड के रहनेवाले हैं । उत्तराखंड के अन्य हिंदी कवियों के नाम मालूम करें और उनके परिचय भी लिखें ।

भाषा की बात

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची लिखें –
   ईश्वर, चंद्रमा, सरस्वती, शिव, दुख
2. निम्नलिखित शब्दों का लिंग-निर्णय करते हुए वाक्य बनाएँ –
   कसम, नाराज, कारोबार, परेशानियाँ
3. निम्नलिखित वाक्यों के कारक पद चिह्नित करते हुए स्पष्ट करें कि वे किस कारक के पद हैं –
   (क) मेरा ईश्वर मुझसे नाराज है ।
   (ख) मैंने त्यागने की कसम खा ली है ।
   (ग) ईश्वर का आधार क्यों हो ?
4. कविता में से निजवाचक शब्दों को लिखें ।

शब्द निधि

ठान लेना	:	संकल्प लेना
कारोबार	:	व्यवसाय
व्यसन	:	आदत, लत